श्रीः ।

पाण्डवगीता ।

(पाण्डवादिकृतंभगवन्नाममाहात्म्यं)

श्रीमत्पण्डित केशवप्रसाद
शर्म्मद्विवेदिकृत
भाषाटीकासहिता ।

SRI RAMAKRISHNA ASHRAMA SRINAGAR
LIBRARY
Accession No. 4760
Date

सा च

खेमराज श्रीकृष्णदास

इत्यनेन

मुम्बय्यां

स्वकीये

"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालये

मुद्रिता ।

शके १८२२ संवत १९५७

इस पुस्तकका रजिस्टरी हक़ "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्राध्यक्षने स्वाधीन रक्खाहै ।

श्रीः ।

पाण्डवगीता ।

(पाण्डवादिकृतंभगवन्नाममाहात्म्यं)

श्रीमत्पण्डित केशवप्रसाद
शर्म्मद्विवेदिकृत
भाषाटीकासहिता ।

सा च

खेमराज श्रीकृष्णदास
इत्यनेन
मुम्बय्यां
स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालये
मुद्रिता ।

शके १८२२ संवत् १९५७

इस पुस्तकका रजिस्टरी हक़ "श्रीवेङ्कटेश्वर"
यन्त्राध्यक्षने स्वाधीन रक्खाहै ।

LIBRARY SRINAGAR.
Accession No- 4760
Date

श्रीः ।

अथ पाण्डवगीता

भाषाटीकासहिता ।

श्लोकः ।

प्रह्लादनारदपराशरपुंडरीकव्यासाम्बरीष
शुकशौनकभीष्मकाद्याः ॥रुक्माङ्गदार्जु
नवसिष्ठविभीषणाद्या एतानहंपरमभागव
तान्नमामि ॥ १ ॥

टीका–प्रह्लाद नाम दैत्योंके राजा नारदमुनि पराशरऋषि पुंडरीक और व्यास अंबरीषराजा शुकदेव शौनक ऋषि भीष्म रुक्मांगद अर्ज्जुन वसिष्ठ और बिभीषणआदि परम भागवतों अर्थात् भगवान्‌के बडे भक्तोंको नमस्कार करताहूं ॥ १ ॥

मूल--लोमहर्षणउवाच ॥ धर्म्मोविवर्द्धतियुधि-
ष्ठिरकीर्त्तनेनपापंप्रणश्यतिवृकोदरकीर्त्तने
न ॥ शत्रुर्विनश्यतिधनंजयकीर्त्तनेनमाद्री-
सुतौकथयतांनभवंतिरोगाः ॥ २ ॥

टीका–लोमहर्षण पाण्डवोंकी स्तुति करते हैं । युधिष्ठिर का नाम लेनेसे धर्म्म बढताहै तथा भीमसेनका नाम लेनेसे पाप दूर होता है और अर्ज्जुन का नाम लेने

से शत्रुका नाश होता है तथा माद्रीसुत अर्थात् नकुल और सहदेवका नाम लेनेसे रोग नहीं होते ॥ २ ॥

मूल--ब्रह्मोवाच ॥ येमानवाविगतरागपराऽपरज्ञानारायणंसुरगुरुंसततंस्मरन्ति॥ ध्यानेनतेनहतकिल्बिषचेतनास्तेमातुःपयोधररसंनपुनःपिबन्ति ॥ ३ ॥

PRASAD RAM S. NO

टीका--ब्रह्माजी बोले॥ जे मनुष्य राग द्वेष करके रहित हों देवताओंके गुरु अर्थात् सब देवताओंमें श्रेष्ठ नारायणका सदा स्मरण करते हैं उस ध्यानसे उनके सब पाप नष्ट होजाते हैं और वे फिर माता का दूध नहीं पीते हैं अर्थात् फिर संसारमें जन्म नहीं लेते हैं ॥ ३ ॥

मूल--इन्द्रउवाच ॥ नारायणोनामनरोनराणांप्रसिद्धचौरःकथितःपृथिव्याम् ॥ अनेकजन्मार्ज्जितपापसंचयं हरत्यशेषंस्मृतमात्र-एवयः ॥ ४ ॥

टीका--इंद्रबोले॥ पृथिवीमेंनारायणनाम प्रसिद्धचोर कहा गया है जो स्मरण करतेही अनेक जन्मोंके इकठे कियेहुए पापोंके समूहको हर लेता है ॥ ४ ॥

मूल--युधिष्ठिरउवाच ॥ मेघश्यामंपीतकौशेयवस्त्रंश्रीवत्सांककौस्तुभोद्भासिताङ्गम् ॥ पुण्योपेतंपुण्डरीकायताक्षंविष्णुंवंदेसर्वलोकैकनाथम् ॥ ५ ॥

P. PRASAD RAM S. NO 1

टीका--युधिष्ठिर बोले ॥ मेघके समान श्याम वर्ण और पीले रेशमी वस्त्र धारण किये हुए श्रीवत्स अर्थात् भृगुलताका है चिह्न जिनके और कौस्तुभ मणिसे प्रकाशित है अंग जिनका और पुण्यकरके युक्त तथा श्वेत कमलके समान हैं नेत्र जिनके ऐसे सब लोकोंके एक स्वामी विष्णुजीको मैं नमस्कार करता हूं ५

मूल--भीमसेनउवाच ॥ जलौघमग्नासचराऽचराधराविषाणकोट्याऽखिलविश्वमूर्तिना ॥ समुद्धृतायेनवराहरूपिणा समेस्वयम्भूर्भगवान् प्रसीदतु ॥ ६ ॥

टीका--भीमसेन बोले॥ जलके समूहमें डूबीहुई चर-अचर समेत सब पृथ्वीको जिस विश्वरूप भगवान्ने वराहरूप धारण करके अपनी डाँढकी नोंकसे निकाला वह स्वयंभू श्रीकृष्ण भगवान् मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ६ ॥

P. PRASAD RAM S. NO 1

मूल--अर्जुनउवाच ॥ अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमव्ययंविभुंप्रभुंभावितविश्वभावनम् ॥ त्रैलोक्यविस्तारविचारकारकंहरिंप्रपन्नोऽस्मिगतिंमहात्मनाम् ॥ ७ ॥

टीका--अर्जुन बोले ॥ जो ध्यानमें नहीं आते और प्रकट नहीं और जिनका अन्त नहीं तथा अविनाशी और समर्थ तथा सर्वव्यापी और तीनों लोकोंके

विस्तारके विचारनेवाले तथा महात्माओंकी गति ऐसे जो प्रभु हरि हैं तिनकी मैं शरणमें हों ॥ ७ ॥

मूल--नकुलउवाच ॥ यदिगमनमधस्तात्काल
पाशानुबंधाद्यदिचकुलविहीनेजायतेपक्षि
कीटे ॥ कृमिशतमपिगत्वाध्यायतेचान्तरा
त्माममभवतुहृदिस्थाकेशवेभक्तिरेका ॥८॥

टीका--नकुल बोले॥ जो कालरूपी फांसीके बंधनमें पडके नरकमें गमन होय और जो कुलहीन पक्षी कीडा आदिमें जन्म होय और सैंकडों कीडोंमें भी जाके अन्तरात्मा का यही ध्यान करके मागताहूं कि केशवकी मुख्य भक्ति मेरे हृदयमें होय ॥ ८ ॥

मूल--सहदेवउवाच ॥ तस्ययज्ञवराहस्यावि
ष्णोरतुलतेजसः ॥ प्रणामंयेप्रकुर्वन्तिते
षामपिनमोनमः ॥ ९ ॥

टीका--सहदेव बोले ॥ यज्ञवाराहका रूप धरनेवाले बडे तेजस्वी विष्णुजीको जो नमस्कार करतेहैं उनको भी मेरा वारंवार नमस्कार है ॥ ९ ॥

मूल--कुन्त्युवाच ॥ स्वकर्म्मफलनिर्दिष्टांयां
यांयोनिंव्रजाम्यहम् ॥ तस्यांतस्यांहृषी
केशत्वयिभक्तिर्दृढास्तुमे ॥ १० ॥

टीका--कुन्ती बोली॥ अपने कर्म्मफल करके बताई हुई जिसजिस योनिमें मैं जाऊं हे हृषीकेश ! तिसतिसमें तुम्हारे विषय मेरी दृढ भक्ति होय ॥ १० ॥

मूल--माद्र्युवाच ।। कृष्णेरताःकृष्णमनुस्मर
न्तिरात्रौचकृष्णंपुनरुत्थितायेः ।। तेभिन्न
देहाःप्रविशन्तिकृष्णे हविर्यथामन्त्रहुतं
हुताशे ।। ११ ।।

टीका--माद्री बोली ॥ जोकृष्णमें रतहैंऔर कृष्णका स्मरण करते हैं रात्रिमें तथा फिर उठके अर्थात् दिनमें वे देह छूटने पर कृष्णमें ऐसे प्रवेश करते हैं जैसे मंत्रसे होमी हुई हवि अर्थात् घृत अग्निमें ॥ ११ ॥

मूल--द्रौपद्युवाच ॥ कीटेषुपक्षिषुमृगेषुसरीसृ
पेषु रक्षःपिशाचमनुजेष्वपियत्रतत्र ।। जा
तस्यमेभवतुकेशवत्वत्प्रसादात्त्वय्येवभ
क्तिरचलाऽव्यभिचारिणीच ।। १२ ।।

टीका--द्रौपदी बोली ॥ हे केशव कीडोंमें पक्षियोंमें मृगोंमें सर्पोंमें राक्षसों पिशाचों और मनुष्योंमें तथा और जहां कहीं उत्पन्न हुई जो मैं हूं तिसकी भक्ति तुम्हारे प्रसादसे तुह्मींमें सदा अचल होय ॥ १२ ॥

मूल--सुभद्रोवाच ।। एकोऽपिकृष्णस्यकृतः
प्रणामोदशाश्वमेधाऽवभृथेनतुल्यः । दशा
श्वमेधीपुनरेतिजन्मकृष्णप्रणामीनपुनर्भ
वाय ।। १३ ।।

टीका--सुभद्रा बोली ॥ एकवार भी कृष्णका किया हुआ प्रणाम दश अश्वमेध यज्ञके समान है, परन्तु दश

अश्वमेधवाला फिर जन्म लेताहै और कृष्णको प्रणाम करनेवाला फिर संसारमें नहीं आता ॥ १३ ॥

मूल--अभिमन्युरुवाच ॥ गोविन्दगोविन्दहरे मुरारेगोविन्दगोविन्दमुकुन्दकृष्ण ॥ गोविन्दगोविन्दरथाङ्गपाणेगोविन्दगोविन्दनमामिनित्यम् ॥ १४ ॥

टीका--अभिमन्यु बोले ॥ हे गोविन्द २ हे हरे हे मुरारे हे गोविन्द२हे मुकुन्द हे कृष्ण हे गोविन्द २ हे रथाङ्गपाणे अर्थात् चक्रपाणे हे गोविन्द २ मुझे न छोडना अर्थात् मेरे ऊपर कृपा रखना ॥ १४ ॥

मूल–धृष्टद्युम्नउवाच ॥ श्रीरामनारायणवासुदेवगोविन्दवैकुण्ठमुकुदकृष्ण ॥ श्रीकेशवानन्तनृसिंहविष्णोमांत्राहिसंसारभुजङ्गदष्टम् ॥ १५ ॥

टीका--धृष्टद्युम्न बोले ॥ हे श्रीराम नारायण वासुदेव गोविन्द वैकुण्ठ मुकुन्द कृष्ण श्रीकेशव अनन्त नृ-सिंह विष्णु संसाररूपी सांप करि काटेहुए मुझको बचाओ ॥ १५ ॥

मूल--सात्यकिरुवाच ॥ अप्रमेयहरोविष्णोकृष्णदामोदराच्युत ॥ गोविन्दाऽनन्तसर्वेशवासुदेवनमोस्तुते ॥ १६ ॥

टीका--सात्यकिनाम यादव बोला॥हे अप्रमेय!अर्था

त् प्रमाणरहित हरि विष्णु कृष्ण दामोदर अच्युत गोविन्द अनन्त सबके स्वामी वासुदेव तुमको नमस्कार होय ॥ १६ ॥

मूल--उद्धवउवाच ॥ वासुदेवंपरित्यज्ययोन्य
देवमुपासते ॥ तृषितोजाह्नवीतीरेकूपंखन
तिदुर्मतिः ॥ १७ ॥

टीका--उद्धवजी बोले ॥ वासुदेव भगवानको तजिके जो और देवकी उपासना करताहै उसकी यह दशा है कि जैसे कोई दुष्ट मति गंगाजीके तटमें प्यासा होके कुआ खोदता है ॥ १७ ॥

मूल--धौम्यउवाच ॥ अपांसमीपेशयनासन
स्थितेदिवाचरात्रौचयथाधिगच्छताम् ॥
यद्यस्तिकिञ्चित्सुकृतंकृतंमयाजनार्दनस्ते
नकृतेनतुष्यतु ॥ १८ ॥

टीका--धौम्यऋषि बोले॥ मैंने जलके समीप तथा सोनेमें वा आसनमें दिनमें तथा रातमें तथा कुछ पुण्य किया होय उससे जनार्दन भगवान् सन्तुष्ट अर्थात् प्रसन्न होय ॥ १८ ॥

मूल--संजयउवाच ॥ आर्त्ताविषण्णाःशिथिला
श्चभीताघोरेषुव्याघ्रादिषुवर्त्तमानाः ॥
सङ्कीर्त्यनारायणशब्दमात्रंविमुक्तदुःखास्सु
खिनोभवन्ति ॥ १९ ॥

टीका--संजयबोले॥ जो मनुष्य पीडितहैं और दुःखी हैं शिथिल हैं तथा भयभीत हैं और घोर व्याघ्रआदि जीवोंमें स्थित हैं वे सब नारायण शब्द मात्रका उच्चारण करके दुखसे छूट के सुखी होते हैं ॥ १९॥

मूल--अक्रूरउवाच ॥ अहमस्मिनारायणदास
दासोदासस्यदासस्यचदासदासः ॥ अन्यो
नईशोजगतोनराणांतस्मादयंधन्यतरोस्मि
लोके ॥ २० ॥

टीका--अक्रूरजी बोले॥ मैं नारायणके दासोंके दासों का दासहूं नारायणके सिवाय और कोई जगत्के मनुष्यों का स्वामि नहीं है इससे मैं लोकमें अति धन्य हूं२०॥

मूल--विराटउवाच ॥ वासुदेवस्ययेभक्ताःशा
न्तास्तद्गतचेतसः ॥ तेषांदासस्यदासोहंभ
वेयंजन्मजन्मनि ॥ २१ ॥

टीका--राजा विराट बोले ॥ शान्त और उन्हीं में चित्त लगानेवाले जो वासुदेवके भक्त हैं मैं उनके दासों के दासोंका दास जन्म २ में होउँ ॥ २१ ॥

मूल--भीष्मउवाच ॥ विपरीतेषुकालेषुपरिक्षी
णेषुबंधुषु ॥ त्राहिमांकृपयाकृष्णशरणा
गतवत्सल ॥ २२ ॥

टीका--भीष्मजी बोले॥ समयके लौट जाने पर और भाई बंधुओंके नाश होजाने पर हे शरणागतके प्यार

करनेवाले कृष्णजी मेरी कृपा करके रक्षा करो ॥२२॥

मूल--द्रोणाचार्यउवाच ॥ येयेहताश्चक्रधरेणदै
त्यास्त्रैलोक्यनाथेनजनार्द्दनेन ॥ तेतेगता
विष्णुपुरींनरेंद्रक्रोधोपिदेवस्यवरेणतुल्यः २३

टीका--द्रोणाचार्यजी बोले॥ चक्रधारण करनेवाले तीनों लोकों के नाथ जनार्दन करि जो जो दैत्य मारे गये हे राजा वे सब विष्णुलोकको गये. देवका क्रोध भी वरके समान है ॥ २३ ॥

मूल--कृपाचार्य्यउवाच ॥ मज्जन्मनःफलमिदं
मधुकैटभारेमत्प्रार्थनीयमदनुग्रहएषएव ॥
त्वद्भृत्यभृत्यपरिचारकभृत्यभृत्यभृत्यस्य
भृत्यइतिमांस्मरलोकनाथ ॥ २४ ॥

टीका--कृपाचार्यजी बोले।हे मधुकैटभनाम दैत्योंके शत्रु महाराज ! मेरे जन्मका यही फल है और मेरा वांछित अनुग्रह यही है कि आपके भृत्योंके भृत्य तिनके सेवकनके भृत्योंके भृत्य तिनके सेवकोंका सेवक जो जो हों तिसे हे लोकनाथ ! स्मरणमें रक्खो ॥ २४ ॥

मूल--अश्वत्थामोवाच॥गोविन्दकेशवजनार्दन
वासुदेवविश्वेशविश्वमधुसूदनविश्वरूप ॥
श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तमदेहिदास्यंनारायणा
ऽच्युतनृसिंहनमोनमस्ते ॥ २५ ॥

टीका--अश्वत्थामाजी बोले ॥ हे गोविन्द ! हे केशव हेजनार्दन हे वासुदेव हे विश्वके स्वामी हे विश्व अर्थात् संसारही हो और हे विश्वरूप अर्थात् तुम्हारा ही रूप है हे श्रीपद्मनाभ हे पुरुषोत्तम मुझे दासभाव दो और हे अच्युत अर्थात् अविनाशी हे नृसिंह तुमको वारंवार नमस्कार है ॥ २५ ॥

मूल--कर्णउवाच॥ नान्यंवदामिनशृणोमिनचिं
तयामिनान्यंस्मरामिनभजामिनचाश्रया
मि॥ भक्त्यात्वदीयचरणांबुजमादरेणश्री
श्रीनिवासपुरुषोत्तमदेहिदास्यम् ॥ २६ ॥

टीका--कर्णबोले॥ न और कहता हौं न सुनता हौं न चितवनकरताहौं न स्मरण करताहौं न भजता हौं और न आश्रय लेताहौं केवल भक्तिसे आदरपूर्वक आपके चरण कमलका ध्यान रखता हौं हे श्रीयुक्त श्रीनिवास हे पुरुषोत्तम दासभाव दीजिये ॥ २६ ॥

मूल--धृतराष्ट्रउवाच ॥नमोनमःकारणवामनाय
नारायणायामितविक्रमाय॥ श्रीशार्ङ्गचक्रा
सिगदाधरायनमोऽस्तुतस्मैपुरुषोत्तमाय२७॥

टीका--धृतराष्ट्र बोले॥कारणसे वामनरूप धरनेवाले जोआप हैं तिनको वारंवार नमस्कार है और नाराय-ण तथा बड़े पराक्रमी और श्रीयुक्त शार्ङ्ग धनुष तथा

सुदर्शन चक्र तथा नन्दक खड्ग तथा कौमोदकी गदा के धारण करनेवाले उन पुरुषोत्तमकोमेरा नमस्कारहै २७

मूल--गान्धार्य्युवाच ॥ त्वमेवमाताचपितात्व
मेवत्वमेवबंधुश्चसखात्वमेव॥ त्वमेवविद्याद्र
विणंत्वमेवत्वमेवसर्वंममदेवदेव ॥ २८ ॥

टीका--गान्धारी बोली ॥ हे कृष्ण! तुमही माता हो और तुमही पिता हो । और तुमही बंधु हो और तुमही मित्र हो, तुमही विद्याहो तुमही धन हो हे देवदेव! महाराज! मेरे तो तुमही सबकुछ हो ॥ २८ ॥

मूल—द्रुपद उवाच॥ यज्ञेशाच्युतगोविन्दमा
धवाऽनन्तकेशव ॥ कृष्णविष्णोहृषीके
शवासुदेवनमोस्तुते॥ २९॥

टीका—द्रुपदराजा बोले॥ हे यज्ञके स्वामी हे अच्युत हे गोविन्द हे माधव हे अनन्त हे केशव हे कृष्ण हे विष्णे, हे हृषीकेश! अर्थात् इन्द्रियों के स्वामी हे वासुदेव! तुमको नमस्कार है ॥ २९ ॥

मूल—जयद्रथ उवाच ॥ नमः कृष्णाय देवाय
ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ योगेश्वरायायोगा
यत्वामहंशरणंगतः ॥ ३० ॥

टीका--जयद्रथ बोला ॥ ब्रह्मरूप और जिनकी शक्तिका अन्त नहीं ऐसे कृष्ण देवको मेरा नमस्कारहै योगेश्वर तथा योगरूप जो आपहैं तिनकी मैं शरणमें आया ३०

P. PRASAD RAM S. NO. I

मूल--विकर्ण उवाच ॥ कृष्णायवासुदेवायदेव
कीनंदनायच ॥ नंदगोपकुमारायगोविन्दा
यनमोनमः ॥ ३१ ॥

टीका--विकर्ण बोले ॥ कृष्ण वासुदेव और देवकी नंदन गोपके कुमार अर्थात् पुत्र जो गोविन्द हैं तिनके लिये मेरा नमस्कार है ॥ ३१ ॥

मूल--सोमदत्त उवाच ॥ नमःपरमकल्याणनम
स्तेविश्वभावन ॥ वासुदेवायशान्तायपशू
नांपतयेनमः ॥ ३२ ॥

टीका--सोमदत्त बोला ॥ परम कल्याण रूप विश्वभावन अर्थात् संसारके पालन कर्त्ता जो आपहैं तिनको मेरा नमस्कार है और वासुदेव तथा शांतरूप और पशुओंके पति जो आप हैं तिनको मेरा नमस्कार है ॥ ३२ ॥

मूल--विराट उवाच ॥ नमोब्रह्मण्यदेवायगोब्रा
ह्मणहितायच ॥ जगद्धितायकृष्णायगोवि
न्दायनमोनमः ॥ ३३ ॥

टीका--विराट बोला ॥ ब्रह्मण्य देव और गौ ब्राह्मण के हित करनेवाले आपको नमस्कार है और जगत्के हितकारी कृष्ण तथा गोविन्द जो आप हैं तिनको मेरा नमस्कार है ॥ ३३ ॥

मूल--शल्य उवाच ॥ अतसीपुष्पसंकाशंपीत

वाससमच्युतम् ॥ येनमस्यन्तिगोविन्दंन
तेषांविद्यतेभयम् ॥ ३४ ॥

टीका--शल्य बोला ॥ अलसीके फूलके समान है रंग जिनका और पीले वस्त्रोंवाले अच्युत गोविन्दको जे नमस्कार करते हैं तिनको भय नहीं ॥ ३४ ॥

मूल--बलभद्र उवाच ॥ कृष्णकृष्णकृपालोत्व
मगतीनांगतिर्भव ॥ संसारार्णवमग्नानांप्र
सीदपुरुषोत्तम ॥ ३५ ॥

टीका—बलदेवजी बोले ॥ हे कृष्ण हे कृष्ण हे कृपालु जिनकी गति नहीं उनकी गति तुम हो और हे पुरुषो-त्तम! संसार रूपी समुद्रमें डूबेहुए जीवों पर प्रसन्न हो ३५॥

मूल—श्रीकृष्णउवाच ॥ कृष्णकृष्णेति कृष्णे
तियोमांस्मरतिनित्यशः ॥ जलंभित्त्वा
यथापद्मंनरकादुद्धराम्यहम् ॥ ३६ ॥

टीका--श्री कृष्णजी बोले ॥ हे कृष्ण हे कृष्ण हे कृष्ण ऐसे जो मुझे नित्य स्मरण करता है उसको मैं जैसे जल को फोडके कमल निकलता है तैसे नरक से निकाल लेता हूं ॥ ३६ ॥

मूल—नित्यंवदामिमनुजाःस्वयमूर्ध्वबाहुर्योमां
मुकुंदनरसिंहजनार्दनेति॥ जीवो जपत्यनु
दिनं मरणे रणे वा पाषाणकाष्ठसदृशाय
ददाम्यभीष्टम्॥ ३७॥

टीका--श्री कृष्णजी फिरभी कहते हैं॥ हे मनुष्यों! मैं भुंजा उठाकर सदा कहता हूं कि जो जीव मरणमें वा रणमें मुकुंद नरसिंह जनार्दन ऐसे प्रतिदिन मुझे जपता है वह चाहे पाषाण वा काठके समान भी होय तौ भी मैं उसको वांछित अर्थात् मुक्ति देता हूं ॥ ३७ ॥

मूल—ईश्वर उवाच ॥ सकृन्नारायणेत्युक्त्वापु
मान्कल्पशतत्रयम् ॥ गङ्गादिसर्वतीर्थेषु
स्नातोभवति पुत्रक ॥ ३८ ॥

टीका--ईश्वर बोले ॥ हे पुत्र ! एकवार नारायण यह शब्द कह कर तीनसौ कल्प पर्य्यंत गंगाआदि सर्व तीर्थों क न्हानेका फल पाता है ॥ ३८ ॥

मूल—सूत उवाच ॥ तत्रैवगङ्गायमुनाच तत्रगो
दावरीसिंधुसरस्वतीच ॥ सर्वाणि तीर्थानि
वसन्तितत्रयत्राच्युतोदारकथाप्रसङ्गः ॥ ३९॥

टीका--सूत बोले ॥ वही गंगा और वही यमुना तथा वही गोदावरी वहीं सिंधु और सरस्वती है सब तीर्थ वहीं वसते हैं कि, जहां अच्युत अर्थात् भगवान्का अच्छा कथा प्रसंग होता है ॥ ३९ ॥

मूल--यम उवाच ॥नरकेपच्यमानेतुयमेनपरि-
भाषितम् ॥ किन्त्वयानार्चितोदेवःकेशवः
क्लेशनाशनः ॥ ४०॥

टीका--यम बोले॥ नरक में पडे हुए जीवसे यमने कहा क्या तूने क्लेशके दूर करनेवाले केशव भगवान् का पूजन नहीं किया? ॥ ४० ॥

मूल--नारदउवाच ॥ जन्मान्तरसहस्रेणतपो
ध्यानसमाधिना ॥ नराणांक्षीणपापानांकृ
ष्णेभक्तिःप्रजायते ॥ ४१ ॥

टीका--नारदजी बोले ॥ हजारों जन्मों करके किये हुए तप और ध्यानकी समाधिसे क्षीण पापवाले मनुष्यों की भक्ति कृष्णमें उत्पन्न होती है ॥ ४१ ॥

मूल--प्रह्लाद उवाच॥नाथयोनिसहस्रेषुयेषुयेषु
व्रजाम्यहम् ॥ तेषुतेष्वचलाभक्तिरच्युता
स्तुसदात्वयि ॥४२॥ याप्रीतिरविवेकानां
विषयेष्वनुधारिणी ॥ त्वदनुस्मरणादेवहृ
दयादपसर्पति ॥ ४३ ॥

टीका--फिरभी प्रह्लादजी बोले॥ हे नाथ! जिन २ हजारों योनियोंमें मैं जाऊँ अर्थात् जन्मलूं हे अच्युत! उन उनमें तुह्मारे विषय अचल भक्ति होय ॥ ४२ ॥ जो प्रीति अज्ञानी मनुष्योंकी विषयोंमें रहती है वह तुह्मारे ध्यान मात्रही से हृदयके बाहर होजाती है ॥ ४३ ॥

मूल--विश्वामित्र उवाच॥ किंतस्यदानैःकिंती

थैःकिंतपोभिःकिमध्वरैः ॥ योनित्यंध्याय
तेदेवंनारायणमनन्यधीः ॥ ४४ ॥

टीका--विश्वामित्र बोले ॥ उसके दानोंसे क्या है और तीर्थोंसे क्या है और तपोंसे क्या है तथा यज्ञोंसे क्याहै ? जो उन्हींमें मन लगाके नारायणका ध्यान करता है ॥ ४४ ॥

मूल--जमदग्निरुवाच ॥ नित्योत्सवोभवेत्तेषां
नित्यंनित्यंचमङ्गलम् ॥ येषांहृदिस्थोभ
गवान्मङ्गलायतनोहरिः ॥ ४५ ॥

टीका--जमदग्निजी बोले ॥ उन मनुष्योंके सदा उत्सव है और नित्य नित्य मंगल है जिनके हृदयमें मंगलके घर भगवान् हरि स्थित हैं ॥ ४५ ॥

मूल--भरद्वाज उवाच ॥ लाभस्तेषांजयस्तेषां
कुतस्तेषां पराजयः॥ येषामिन्दीवरश्यामो
हृदयस्थोजनार्दनः ॥ ४६ ॥

टीका--भरद्वाजजी बोले ॥ उन्हींको लाभ है और उन्हींका विजय है और पराजय कहां ? जिनके हृदयमें नील कमलके समान श्याम जनार्दन स्थित हैं ॥ ४६ ॥

मूल--गौतम उवाच ॥ गोकोटिदानंग्रहणे
षुकाशीप्रयागगंगायुतकल्पवासः ॥ य
ज्ञायुतंमेरुसुवर्णदानंगोविन्दनामस्मरणेन
तुल्यम् ॥ ४७ ॥

टीका--गौतमजी बोले॥ करोड गौका दान और ग्रहणमें काशी का स्नान और प्रयागमें दश हजार कल्प पर्य्यंत वास करना और दशहजार यज्ञ करना और मेरु पर्वतकी बराबर सुवर्णदान ये सब एक वेर गोविन्द नामके स्मरणकी समान हैं ॥ ४७ ॥

मूल--अग्निरुवाच॥गोविन्देतिसदास्नानंगोविन्दे
तिसदाजपः ॥ गोविन्देतिसदाध्यानंसदागो
विन्दकीर्त्तनम् ॥ ४८ ॥

टीका--अग्नि बोले॥ गोविन्दनामहीका उच्चारण सदा स्नान है और गोविन्दही सदा जप है तथा गोविन्द नामहीका सदा ध्यान है और सदा गोविन्दहीका कीर्त्तन है ॥ ४८ ॥

मूल--त्र्यक्षरंपरमंब्रह्मगोविन्देतित्र्यक्षरंपर
म् ॥ तस्मादुच्चरितंयेनब्रह्मभूयायकल्प
ते ॥ ४९ ॥

टीका--गोविन्द ये तीन अक्षर परम ब्रह्मरूपहै तिससे जिसने ये तीनि अक्षर उच्चारण किये वह ब्रह्ममें लय होजायगा ॥ ४९ ॥

मूल--श्रीबादरायणिरुवाच ॥ अच्युतःकल्प
वृक्षोऽसावनन्तःकामधेनवः ॥ चिन्तामणि
स्तुगोविन्दोहरेर्नामविचिंतयेत् ॥ ५० ॥

टीका--श्री बादरायणि बोले॥ अच्युत यह नाम कल्प-वृक्ष है और अनन्त यह कामधेनु है और गोविन्द यह चिन्तामणि है हरिका नाम चिंतवन करे ॥ ५० ॥

मूल--हरिरुवाच ॥ जयतुजयतुदेवोदेवकीनंदनोयंजयतुजयतुकृष्णोवृष्णिवंशप्रदीपः ॥
जयतुजयतुमेघश्यामलःकोमलाङ्गोजयतुजयतुपृथ्वीभारनाशोमुकुन्दः ॥ ५१ ॥

टीका--इन्द्र बोले॥ जय होय होय देवकीके पुत्र देवकी जयहोय जय होय यदुवंशके प्रकाश करनेवाले कृष्णकी. जय होय जय होय मेघसमान श्याम कोमल अंगवालेकी जय होय जय होय पृथ्वीके भार नाश करनेवाले मुकुंद की ॥ ५१ ॥

मूल--पिप्पलायन उवाच॥श्रीमन्नृसिंहविभवेगरुडध्वजायतापत्रयोपशमनायभवौषधाय॥
कृष्णायवृश्चिकजलाग्निभुजङ्गरोगक्लेशव्ययायहरयेगुरवेनमस्ते ॥ ५२ ॥

टीका--पिप्पलायन बोले॥ श्रीयुक्त नृसिंहरूप समर्थ और गरुड है ध्वजा में जिनके और तीन प्रकारके ताप आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक इन तीनों भाँति के तापोंके दूर करनेवाले संसारकी ओषधि ऐसे कृष्ण जीको तथा विच्छू जल अग्नि सांप रोग इन क्लेशोंके दूर करनेवाले गुरु जो हरि तुमहो तिनको नमस्कारहै॥ ५२॥

मूल--हविर्होत्र उवाच ॥ कृष्णत्वदीयपदपंक
जपिंजरान्तेअद्यैव मे विशतु मानसराजहं
सः ॥ प्राणप्रयाणसमयेकफवातपित्तैः कं
ठाऽवरोधनविधौस्मरणंकुतस्ते ॥ ८३ ॥

टीका--हविर्होत्रबोले॥ हे कृष्ण? तुह्मारे चरणकमलरूपी पिंजरेमें मेरा मनरूपी राजहंस अभी प्रवेश करो प्राणोंकी यात्राके समय कफवातपित्तसे कंठके रुक जाने में तुह्मारा स्मरण कहां ॥ ५३ ॥

मूल--विदुर उवाच ॥ हरेर्नामैव नामैवनामैवम
मजीवनम्॥ कलौनास्त्येवनास्त्येवनास्त्ये
वगतिरन्यथा ॥ ८४ ॥

टीका--विदुरजी बोले ॥ हरिका नामही मेरा जीवनहै कलियुगमें और प्रकारसे गति नहीं है ॥ ५४ ॥

मूल--वसिष्ठ उवाच॥ कृष्णेतिमंगलंनामयस्य
वाचाप्रवर्त्तते ॥ भस्मीभवन्तितस्याशुम
हापातककोटयः ॥ ८८ ॥

टीका--वसिष्ठजी कहते हैं॥ कृष्ण यह मंगल नाम जिसकी वाणीसे निकलता है उसकी बडे पापोंकी कोटि शीघ्रही भस्म होजाती है ॥ ५५ ॥

मूल--अरुन्धत्युवाच ॥ कृष्णायवासुदेवाय हर
येपरमात्मने ॥ प्रणतक्लेशनाशाय गोवि
न्दाय नमोनमः ॥ ८६ ॥

टीका--अरुंधती बोली॥ कृष्ण वासुदेव हरि परमात्मा और शरणागतका क्लेश नाश करनेवाले गोविन्दको वारंवार मेरा नमस्कार है ॥ ५६ ॥

मूल--कश्यप उवाच।। कृष्णानुस्मरणादेवपाप संघट्टपंजरम् ॥ शतधाभेदमाप्नोतिगिरिर्व ज्रहतोयथा ॥५७ ॥

टीका--कश्यपबोले।।कृष्णका स्मरण करने हींसे पापोंके समूह का पंजर सौ खंडों में टूट जाता है जैसे वज्रका मारा हुवा पर्वत ।। ५७ ।।

मूल--दुर्योधन उवाच॥जानामिधर्म्मंनचमेप्रवृत्ति र्जानामिपापंनचमेनिवृत्तिः ॥केनापिदेवेन हृदिस्थितेनयथानियुक्तोस्मितथाकरोमि ५८

टीका--दुर्योधनबोला ॥ धर्म को जानताहूं परन्तु मेरी प्रवृत्ति नहीं और पापको जानता हूं परन्तु निवृत्ति नहीं हृदयमें बैठे हुए किसी देव करि जैसा प्रेरणा किया गया हों वैसा करता हों ।। ५८ ।।

मूल--यंत्रस्यममदोषेणक्षम्यतांमधुसूदन ।। अहंयंत्रंभवान्यंत्रीममदोषोनदीयताम्॥५९॥

टीका--यंत्र जो शरीर है तिसके गुण और दोष से हे मधुसूदन!क्षमा करो मैं तो यंत्रहों और आप यंत्री अर्थात् प्रेरक हो जो प्रेरणा करते सो करता हों ।।५९।।

मूल--भृगुरुवाच॥नामैवतवगोविन्दनामत्वत्तः

शताऽधिकम् ॥ददात्युच्चारणान्मुक्तिंभवा-
नष्टाङ्गयोगतः ॥ ६० ॥

टीका–भृगुजी बोले॥ हे गोविंद तुह्मारा नामहीं तुम से सौगुणा अधिक है क्योंकि उच्चारणा ही से मुक्ति को देता है और तुम अष्टांग योगसे मुक्ति देत हौं ॥६०॥

मूल--लोमशउवाच ॥ नमामिनारायणपादप
ङ्कजंकरोमिनारायणपूजनंसदा ॥ वदामि
नारायणनामनिर्मलंस्मरामिनारायणतत्त्व
मव्ययम् ॥ ६१ ॥

टीका--लोमश ऋषि बोले।।नारायण के चरणकम-लको नमस्कार करता हों और सदा नारायण का पूजन करता हों और निर्मल नारायण के नामका उच्चारण करता हों और अविनाशी नारायण रूपी तत्वका स्मरण करता हों ॥ ६१ ॥

मूल--शौनकउवाच ॥ स्मृतेसकलकल्याण
भाजनंयत्रजायते ॥ पुरषस्तमजंनित्यं
व्रजामिशरणंहरिम् ॥ ६२ ॥

टीका--शौनकजी बोले ॥ जिसका स्मरण करने से मनुष्य सब कल्याणों का पात्र होता है मैं उस अजन्मा हरिके शरणमें जाताहों ॥ ६२ ॥

मूल--गर्गउवाच ॥ नारायणेतिमन्त्रोऽस्तिवा

गस्तिवशवर्तिनी ॥ तथापिनरके घोरेपत
न्तीत्यद्भुतंमहत् ॥ ६३ ॥

टीका--गर्गजी बोले॥ नारायण यह मंत्र विद्यमान् है और वाणी वश में है तिसपरभी मनुष्य घोर नरकमें पडतेहैं यह बडा अचंभा है ॥ ६३ ॥

मूल--दाल्भ्यउवाच ॥ किंतस्यबहुभिर्मंत्रैर्भ-
क्तिर्यस्यजनार्दने ॥ नमोनारायणायेतिम-
न्त्रस्सर्वार्थसाधकः ॥ ६४ ॥

टीका--दाल्भ्यजी बोले ॥ जनार्दन भगवान में जिसकी भक्ति है उसको बहुत मंत्रोंसे क्या प्रयोजन है नमो नारायणाय यही मंत्र सब प्रयोजनों का साधन वालाहै ॥ ६४ ॥

मूल--वैशंपायनउवाच ॥ यत्रयोगेश्वरःकृष्णो
यत्रपार्थोधनुर्द्धरः॥तत्रश्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवा
नीतिर्मतिर्मम ॥ ६५ ॥

टीका--वैशंपायनजी बोले॥जहां योगेश्वर कृष्ण हैं और धनुषधारी अर्जुनहैं वहां लक्ष्मी विजय और ऐश्वर्य तथा नीति है यह मेरी बुद्धिमें निश्चय है ॥ ६५ ॥

मूल--अग्निरुवाच ॥ हरिर्हरतिपापानिदुष्टचि
त्तैरपिस्मृतः॥ अनिच्छयापिसंस्पृष्टोदह
त्येवहिपावकः ॥ ६६ ॥

टीका--अग्निबोले॥दुष्ट चित्तोंकरके भी स्मरण किये

गये हरि पापोंको हर लेते हैं जैसे अनिच्छासे भी स्पर्श किया अग्नि जला ही देता हैं ॥ ६६ ॥

मूल–परमेश्वरउवाच ॥ सकृदुच्चरितंयेनहरिरि त्यक्षरद्वयम् ॥ बद्धःपरिकरस्तेनमोक्षाय गमनंप्रति ॥ ६७ ॥

टीका–परमेश्वर बोले ॥ जिसने हरी इन दोनों अक्षरोंका एक बार भी उच्चारण किया उसने मोक्षको जाने के लिये फेंट बांधी ॥ ६७ ॥

मूल--पुलस्त्यउवाच ॥ हेजिव्हेरससारज्ञेसर्वदा मधुरप्रिये ॥ नारायणाख्यपीयूषंपिब जिव्हेनिरन्तरम् ॥ ६८ ॥

टीका--पुलस्त्यजी बोले ॥ हे रसके सार की जानने वाली और सदा मीठा है प्यारा जिस को ऐसी हे जीभ! नारायण नाम अमृत का तू सदा पान कर ॥ ६८ ॥

मूल--व्यास उवाच ॥ सत्यंसत्यंपुनस्सत्यंसत्यं सत्यंवदाम्यहम् ॥ नास्तिवेदात्परंशास्त्रंन देवःकेशवात्परः ॥ ६९ ॥

टीका--व्यासजी बोले ॥ सत्य है सत्यहै मैं वारंवार कहता हों कि वेदसे परे कोई देव नहीं ॥ ६९ ॥

मूल--धन्वन्तारिरुवाच ॥ अच्युतानन्तगोवि न्दनामोच्चारणभेषजम् ॥ नश्यन्तिसकला रोगास्सत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ ७० ॥

टीका--धन्वन्तरि जी बोले ॥ अच्युत अनन्त गोविन्द इन नामों का उच्चारण औषधि है इससे सब रोग दूर होते हैं मैं सत्य सत्य कहता हौं ॥ ७० ॥

मूल--मार्कण्डेयउवाच ॥ स्वर्गदंमोक्षदंदेवंसुखदंजगतोगुरुम् ॥ कथंमुहूर्त्तमपितंवासुदेवन्नचिंतयेत् ॥ ७१ ॥

P. PRASAD RAM S. NO I

टीका--मार्कण्डेय जी बोले ॥ स्वर्ग मोक्ष तथा सुखके देने वाले जगतके गुरु उन वासुदेवको क्षणमात्र भी क्यों न चिंतवन करै ॥ ७१ ॥

मूल--अगस्त्यउवाच ॥ निमिषंनिमिषार्द्धंवा प्राणिनांविष्णुचिन्तनम् ॥ तत्रतत्रकुरुक्षेत्रं प्रयागंनैमिषंवनम् ॥ ७२ ॥

टीका--अगस्त्य जी बोले ॥ एक पल वा आधे पल प्राणियों को जो विष्णु का चिन्तवन है वही कुरुक्षेत्र प्रयाग तथा नैमिषारण्यक्षेत्र है ॥ ७२ ॥

मूल--वामदेवउवाच ॥ निमिषंनिमिषार्द्धंवाप्राणिनांविष्णुचिन्तनम् ॥ कल्पकोटिसहस्राणिलभतेवांछितंफलम् ॥ ७३ ॥

टीका--वामदेवजी बोले ॥ एक पल वा आधे पल जो विष्णु का ध्यान है उससे करोड कल्प वास का वांछित फल मिला है ॥ ७३ ॥

मूल--शुकउवाच ॥ आलोड्यसर्वशास्त्राणिवि
चार्य्यंचपुनः पुनः ॥ इदमेकंसुनिष्पन्नंध्ये
योनारायणस्सदा ॥ ७४ ॥

टीका--शुकजी बोले ॥ सब शास्त्रों को आलोडनकर-
और वारंवार विचार करके मुझे यही एक निश्चय हुआ
कि नारायण हरि का ध्यान करना उचित है ॥ ७४ ॥

मूल--श्रीमहादेवउवाच ॥ शरीरेजर्ज्जरीभूतेव्या
धिग्रस्तेकलेवरे ॥ औषधंजाह्नवीतोयंवैद्यो
नारायणोहरिः ॥ ७५ ॥

टीका--श्री महादेवजीबोले ॥ शरीर के जीर्ण होने
और रोगों के ग्रसनेपर गंगाजल तौ औषधि है और
नारायण हरि वैद्य हैं ॥ ७५ ॥

मूल--शौनकउवाच ॥ भोजनेछादनेचिन्तांवृ
थाकुर्वन्तिवैष्णवाः ॥ योऽसौविश्वम्भरोदे
वस्सकिंभक्तानुपेक्षते ॥ ७६ ॥

टीका--शौनक बोले ॥ वैष्णव भोजन और वस्त्रकी
चिन्ता वृथा करते हैं क्यौं कि जो यह संसार का पाल-
नेवाला है वह भक्तों की कैसे उपेक्षा करैगा ॥ ७६ ॥

मूल--सनत्कुमारउवाच ॥ यस्यहस्तेगदाच
क्रंगरुडोयस्यवाहनम् ॥ शंखचक्रगदा
पद्मीसमेविष्णुः प्रसीदतु ॥ ७७ ॥

टीका--सनत्कुमारजी बोले॥ जिनकेहाथमें गदा और चक्रहै तथा गरुड जिनके वहान और शंख चक्र गदा और पद्म जिनके हाथमें है सो मेरे ऊपर प्रसन्नहों ॥ ७७॥

मूल--एवंब्रह्मादयोदेवाऋषयश्चतपोधनाः॥की
र्त्तयन्तिसुरश्रेष्ठमेवंनारायणंविभुम् ॥७८॥

टीका--ऐसे ब्रह्म आदि देवता और तपस्वी ऋषिदेवताओंमें श्रेष्ठ एकनारायण प्रभुका कीर्त्तन करतेहैं ७८॥

मूल--इदंपवित्रमायुष्यंपुण्यंपापप्रणाशनम् ॥
दुःस्वप्ननाशनंस्तोत्रंपांडवैःपरिकीर्तितम् ७९

टीका--यह पवित्र तथा आयुष्य बढानेवाला पवित्र तथा पापका तथा दुःखका नाश करने वाला स्तोत्र पाण्डवोंकरि कहागया ॥ ७९ ॥

मूल-- यःपठेत्प्रातरुत्थायशुचिस्तद्गतमान
सः ॥ गवांशतसहस्रस्यसम्यग्दत्तस्यय
त्फलम् ॥ ८० ॥ तत्फलंसमवाप्नोतियः
पठेदितिसंस्तवम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोवि
ष्णुलोकंसगच्छति ॥ ८१ ॥

टीका--जो प्रातःकाल उठकर शुद्ध हो उनमें मन लगाके पाठ करता है वह अच्छी भांति दीहुई लाख गौओंका फल पाता है और जो इस स्तोत्रका पाठ करता है वह सब पापोंसे छूट कर विष्णुलोक को जाता है ॥ ८० ॥ ८१ ॥

मूल–गङ्गागीताचगायत्रीगोविन्दोगरुडध्वजः॥
चतुर्गकारसंयुक्तःपुनर्जन्मनविद्यते॥ ८२॥

टीका–गंगा गीता और गायत्री गोविंदगरुडध्वज इन चार गकारोंका जो उच्चारण करै तो उसका फिर संसारमें जन्म न होय अर्थात् मक्ति पावै ॥ ८२ ॥

मूल–गीतांयःपठते नित्यं श्लोकार्द्धं श्लोकमेव
च॥ मुच्यते सर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसग
च्छति ॥ ८३ ॥

इति श्रीपाण्डवगीता समाप्ता ॥

टीका–गीता का जो नित्यपाठ करे वा एक श्लोकका वा आधे श्लोकका पाठ करे वह सब पापों से छूट कर विष्णुलोकको गमन करै ॥ ८३ ॥

इति श्रीमत्पंडित केशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिविरचिता
पाण्डवगीताभाषाटीका समाप्ता ॥ शुभम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना--

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना (मुंबई.)